हैल्थ-टुडे अक्टूबर-08 पेज 6

संक्रामक रोग और टीकाकरण
पोलियो, डिफ्थीरिया, काली खांसी, टेटनस,
टीबी, टायफाइड, मस्तिष्क ज्वर, इंफ्लूएंजा,
हेपेटाइटिस ए और बी। उपरोक्त सभी
संक्रमणजन्य रोग टीकाकरण के द्वारा रोके
जा सकते हैं। अतः इन्हें वैक्सीन प्रिवेंटेबल
डिजीज कहते हैं। अर्थात् वे बीमारियां जिन्हें
टीकाकरण से रोका जा सके वीपीडी
कहलाती है। इनमें से छह बीमारियों को
राष्ट्रीय टीकाकरण अभियान में सम्मिलित
किया गया है। ये हैं - टीबी, पोलियो,
खसरा, डिफ्थीरिया, काली खांसी व
टिटनेस। भारत में हर वर्ष संक्रामक रोगों से
लाखों बच्चे मौत के मंुह में चले जाते हैं तथा
काफी बच्चे अपंग हो जाते हैं। इन संक्रामक
जानलेवा बीमारियों से बचने का एकमात्र
प्रभावशाली तरीका “टीकाकरण” है।
जन्म पर: बीसीजी, पोलियो,
हेपेटाइटिस-बी (कुछ क्षेत्रों में पायलट
प्रोजेक्ट के तहत)
6 हफ्तों पर: बीसीजी (यदि जन्म पर नहीं
लगा), डीपीटी, पोलियो
10 हफ्तों पर: डीपीटी, पोलियो
14 हफ्तों पर: डीपीटी, पोलियो
9 माह पर: मीजल्स (खसरा)
16 से 24 माह: डीपीटी (पहला बूस्टर),
पोलियो (पहला बूस्टर)
5 से 6 वर्ष: डीपीटी (दूसरा बूस्टर),
पोलिया (दूसरा बूस्टर)
टीकाकरण की संक्षिप्त जानकारी
सबसे पहले उन टीकों के बारे में जानकारी
दी जा रही है जो राष्ट्रीय टीकाकरण
अभियान में सम्मिलित किए गए हैं। ये निम्न
प्रकार से हैं - बी.सी.जी., पोलियो,
डीपीटी, मीजल्स (खसरा), पीलिया-बी
(कुछ क्षेत्रों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत)।
बीसीजी

यह टीका टीबी से बचने के लिए लगाया
जाता है। यदि प्रसव स्वास्थ्य केन्द्रों में हुआ
है, तो इसे जन्म पर ही लगा दिया जाता है।
अन्यथा इसे डेढ़ माह की उम्र पर अन्य
टीकों के साथ लगाया जाता है। इस टीके
को बांई भुजा पर ऊपर लगाया जाता है
तथा यह टीका 6 से 8 हफ्ते में पक जाता
है। इसका पकना आवश्यक है। जो यह
दर्शाता है कि टीका असरदार हो गया है।
यदि यह टीका 12 हफ्ते (तीन माह) में नहीं
पके तो इसे पुनः लगवाना चाहिए।
पोलियो

पोलियो की खुराक मुंह द्वारा दी जाती है।
इसकी एक खुराक जन्म पर बीसीजी के
साथ दी जाती है। इस खुराक को पोलियो
की जीरो खुराक कहते हैं। इसके बाद
पोलियो की दूसरी खुराक डेढ़ माह पर,
तीसरी, खुराक ढाई माह पर तथा चौथी
खुराक साढ़े तीन माह पर डीपीटी के साथ
दी जाती है। इनके अतिरिक्त पांचवी खुराक
खसरे के टीके के साथ 9 माह पर, छठी
खुराक 16-24 माह पर डीपीटी के पहले
बूस्टर के साथ सातवीं खुराक डीटी या
डीपीटी की दूसरी बूस्टर खुराक के साथ 5
से 6 वर्ष पर दी जाती है।
पल्स पोलियो

भारत में पल्स पोलियों अभियान के तहत
सर्वप्रथम 9 दिसंबर 1995 एवं 20 जनवरी
1996 को पल्स पोलियो के दो चक्र
संचालित किए गए थे। इसके बाद इस
अभियान के कई चक्र संचालित हुए हैं।
अभी तक पोलियो उन्मूलन में पूर्ण सफलता
प्राप्त नहीं हुई है। पल्स पोलियो की खुराकें
पोलियों की नियमित खुराकों के अतिरिक्त
पिलाई जाती है। पल्स पोलियो की खुराक
का पिलाया जाना पोलियो उन्मूलन के लिए
अति आवश्यक है। इसे नजरअंदाज नहीं
करें। बच्चा बीमार हो या उसने पोलियो की
नियमित खुराक चाहे एक-दो दिन पूर्व ही

स

ं

ÿामक रोग और टीकाकरण

क्यों न पी हो, उसे पल्स पोलियो की खुराक
अवश्य पिलाएं।
MhihVh

यह टीका शिशु को तीन बीमारियों से बचाता
है। ये तीनों बीमारी जानलेवा हैं। ये हैं:-
1. डिफ्थीरिया (गलघोंटू)
2. पर्ट्यूसिस (काली खांसी/कूकर खांसी)
3. टेटनस (धनुष बाए)
इसकी पहली खुराक डेढ़ माह पर, दूसरी
ढाई माह पर एवं तीसरी साढे़ तीन माह पर
लगाई जाती है।
चौथी खुराक 16 से 24 माह पर (पहला
बूस्टर) तथा पांचवीं खुराक 5-6 वर्ष पर
(दूसरा बूस्टर) लगाई जाती है।
खसरा ;मीजल्सद्ध
यह बीमारी भी जानलेवा है। अतः इसका
टीका समय पर लगवाना अति आवश्यक है।
खसरा या मीजल्स का टीका 8 से 9 माह की
उम्र में लगाया जाता है। यदि किसी

कारणवश यह टीका समय पर नहीं लगा है,
तो इसे बाद में चिकित्सक की सलाह से
लगवाया जा सकता है।
हेपेटाइटिस ;पीलियाद्ध
पीलिया कई प्रकार का होता है जैसे कि ए,
बी, सी, डी, ई आदि। परंतु टीके केवल ए
तथा बी टाइप के ही उपलब्ध हैं तथा लगाए
जाते हैं। हेपेटाइटिस-बी का टीका पायलट
प्रोजेक्ट के तहत कुछ क्षेत्रों में सरकार द्वारा
मुफ्त उपलब्ध कराया जाता है। इसकी
पहली खुराक जन्म पर या डेढ़ माह के
टीकों के साथ लगाई जाती है। दूसरी व
तीसरी खुराकें एक-एक माह के अंतर से
लगाई जाती हैं।

अन्य महत्वपूर्ण टीके
हिब, एमएमआर, टायफाइड, पॉक्स,
हिपेटाइटिस-ए, इंफ्लूएंजा। ये टीके
राष्ट्रीय टीकाकरण अभियान में सम्मिलित
नहीं है परंतु आवश्क है एवं बाजार से

खरीदकर चिकित्सक की सलाह से लगवाने
चाहिए।
हिब

यह टीका मस्तिष्क ज्वर एवं निमोनिया से
बचाव के लिए लगाया जाता है। इसकी
पहली खुराक डेढ़ माह, दूसरी ढाई माह तथा
तीसरी खुराक साढ़े तीन माह पर लगाई
जाती है। इसकी एक बूस्टर खुराक भी 16 से
24 माह की उम्र में लगवानी चाहिए।
एमएमआर

यह टीका तीन बीमारियों खसरा, गलसुए
तथा रूबैला से बचाव करता हैं इसकी केवल
ए क खुराक 15 माह की उम्र के बाद लगाई
जाती है।
टाइफाइड

टाइफाइड का टीका 2 वर्ष की उम्र के
बाद लगाया जाता हैं। प्रत्येक तीन वर्ष
के बाद पुनः लगवाना चाहिए।

चिकन पॉक्स
इस टीके को छोटी माता के संक्रमण से
बचने के लिए लगाया जाता हैं इस
टीके को 1 वर्ष की उम्र के बाद
लगवाना चाहिए। यदि बच्चा 13 वर्ष का
हो गया है, तो भी इसे लगाया जा
सकता है। परंतु 13 वर्ष के बाद इसकी
दो खुराकें एक माह के अंतर पर लगाई
जाती है।
हेपेटाइटिस-ए

यह टीका भी एक वर्ष की उम्र के बाद
लगाया जाता है। इसकी दो खुराकें 6
माह के अंतर से लगाई जाती हैं।

इं∂लूएंजा
इस टीके की दो खुराकें 1 माह के अंतर
से 6 माह व 7 माह की उम्र पर लगाई
जाती हैं इसके बाद इसकी प्रत्येक वर्ष
की खुराक पिलाई जाती है।
ध्यान देने योग्य बात

त सभी टीके समय पर लगवाने चाहिए।
परंतु यदि किसी वजह से चूक हो जाए तो
टीके देर से भी (चिकित्सक की सलाह से)
श् ाुरू किए जा सकते हैं।
त सर्दी, जुकाम, मामूली-सी खांसी, दस्त
ए वं सूखा रोग में भी टीके लगवाए जाने
चाहिए।
त डीपीटी के टीके के बाद थोड़ा बुखार
भी आता हैं इससे विचलित होने की
आवश्यकता नहीं है।
त बच्चे को चिकित्सक की सलाह से
पैरासीटामोल की दवा दें। यदि डीपीटी
के टीके के बाद बच्चा बहुत अधिक रोता
है तो चिकित्सक से अवश्य परामर्श करें।
त खसरे के टीके के बाद कुछ बच्चों को
हल्का बुखार व कुछ दाने निकल आते हैं।
यदि बच्चे को तेज बुखार या बेहोशी आने
लगे तो तुरंत चिकित्सक से परामर्श करें।

वृद्धावस्था में परेशान करने वाली एक बीमारी
है पार्किन्सन। यह बीमारी दुनियाभर के
उम्रदराज लोगों के लिए परेशानी का सबब
बनी हुई है।
क्यों होती है यह बीमारी

यह दिमाग के एक छोटे से हिस्से में स्थित
सेल्स के क्षतिग्रस्त होने की वजह से होती है,
लेकिन आखिर ये सेल्स डैमेज क्यों होती है।
इसके बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं है।
विशेषज्ञ अभी तक न तो इसे नियंत्रित करने
के तरीके ढूंढ पाए हैं और न ही इसका
पर्मानेंट इलाज उपलब्ध करा पाए हैं।
ऐसे में डाक्टर की सलाह और परिवार
के सहयोग से मरीज की समस्या को कुछ
हद तक कम किया जा सकता है।
क्या है पार्किन्सन

यह बीमारी 50 वर्ष की उम्र के बाद होती है।
ए स.एम.एस. हॉस्पिटल एवं मेडिकल कॉलेज
के एसोसिएट प्रोफेसर एवं न्यूरोलॉजिस्ट डा.
आर.एस. जैन के मुताबिक दिमाग के एक
खास हिस्से गैंग्लिया से निकलने वाला
डोपामिन नामक केमिकल शारीरिक
गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए
न्यूरोट्रांसमीटर का काम करता है। इस
बीमारी में डोपामिन केमिकल बनना बंद हो
जाता है। इससे व्यक्ति की शारीरिक
गतिविधियों पर से कंट्रोल हट जाता है।

लक्षण

पार्किंसन से पीड़ित व्यक्ति के शरीर में
लगातार कंपन होता है, शारीरिक बैलेंस
बिगड़ जाता है।
याददाश्त कमजोर हो जाती है, मुंह से
पानी-लार निकलने लगता है। व्यक्ति को
चलने-फिरने में बहुत दिक्कत होती है। इन
लक्षणों के कारण भीड़भाड़ वाले इलाके,
बस, ट्रेन आदि में जाने से मरीज को डर
लगने लगता है।
कितनी कॉमन है पार्किन्सन

पचास वर्ष की उम्र पार के बाद वैसे तो यह
बीमारी किसी को भी हो सकती है, लेकिन
पुरुषों में इसका असर थोड़ा ज्यादा देखा

गया है। विश्व में लगभग 60 लाख से ज्यादा
लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं। अमरीका में
लगभग दस लाख से ज्यादा लोग इस
बीमारी से प्रभावित हैं।
65 वर्ष से ज्यादा उम्र के हर दसवें
व्यक्ति में इसके लक्षण नजर आते हैं। जीवन
अवधि बढ़ने के कारण भारत में भी इसके
पीड़ितों की संख्या काफी ज्यादा हो गई है।
बीमारी की संभावना

यह भविष्यवाणी करना असंभव है कि यह
बीमारी किसे हो सकती है। कुछ अनुसंधानों
से पता लगा है कि पार्किन्सन से पीड़ित
लगभग दस प्रतिशत मरीजों के परिवार में

पहले भी इस तरह की समस्या देखी
गई थी।
उपचार

कारगर इलाज अभी उपलब्ध नहीं है,
लेकिन बीमारी के असर को कम करने के
लिए कई तरह की दवाएं उपलब्ध हैं, जो
डोपामिन के स्त्राव को बढ़ाने में मदद करती
है। इसकी दवाएं विशेषज्ञ की देखरेख में ही
दी जाती है। कई गंभीर रोगियों के लिए
डीप दिमाग स्टिम्युलेशन सर्जरी भी होने
लगी है। दिल्ली में इसकी सुविधा ऑल
इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
और आर्मी हॉस्पिटल में उपलब्ध हैं।
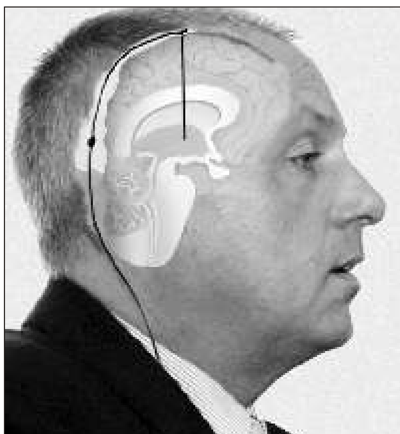
यदि प्रभु में आसक्त मनुष्यों का पल भर भी संग प्राप्त हो जाए, तो उससे स्वर्ग और मोक्ष की तुलना नहीं कर सकते।